HINDI FILE

SIX SIGMA IAS

Dream | Dare | Deliver

DREAM FOR NATION | DARE TO SERVE | DELIVER WITH INTEGRITY

DAILY PRACTICE QUESTIONS

BEST FOR UPSC | UP PCS EXAM

DATE : AUGUST 27, 2026

Comprehensive Coverage | Exam-Focused Analysis | Concept Clarity & Insights | Practice MCQs with Explanation | Daily Updates, Better Results

CONTACT INFO:
+91 92896 33341 | +91 96679 33341

EMAIL ID:
info@sixsigmaias.com

WEB PAGE:
www.sixsigmaias.com

ADDRESS:
C-6, GROUND FLOOR, SECTOR 2,
NEAR SECTOR 15 METRO STATION, NOIDA – 201301, UTTAR PRADESH

दैनिक अभ्यास प्रश्न - स्थैतिक भाग से

प्रश्न 1. चार्टर अधिनियम 1813 (Charter Act of 1813) से संबंधित निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. इसने ईस्ट इंडिया कंपनी का भारत में व्यापार पर एकाधिकार समाप्त कर दिया, परंतु चाय और चीन के साथ व्यापार पर एकाधिकार बनाए रखा।
2. इसने पहली बार भारतीय शिक्षा को प्रोत्साहित करने हेतु राज्य की शैक्षिक जिम्मेदारी को मान्यता दी और इसके लिए धन आवंटित किया।

उपरोक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(a) केवल 1
(b) केवल 2
(c) 1 और 2 दोनों
(d) न तो 1 और न ही 2
उत्तर : (c)
व्याख्या:

- चार्टर अधिनियम 1813 ने भारत में ईस्ट इंडिया कंपनी के वाणिज्यिक एकाधिकार को समाप्त कर दिया, किंतु चाय और चीन के साथ व्यापार के लिए इसे बनाए रखा। अतः कथन 1 सही है।
- इस अधिनियम ने भारतीय शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए प्रतिवर्ष 1 लाख रुपये आवंटित किए, जिससे पहली बार राज्य की जिम्मेदारी को स्वीकार किया गया। अतः कथन 2 भी सही है।

प्रश्न 2. अनुसूचित जनजाति तथा अन्य परंपरागत वनवासी (वन अधिकारों की मान्यता) अधिनियम, 2006 के प्रावधानों के अंतर्गत निम्नलिखित में से कौन-सा अधिकार मान्य नहीं है?
(a) लघु वन उपज पर स्वामित्व अधिकार
(b) वन ग्रामों को राजस्व ग्रामों में परिवर्तित करने का अधिकार
(c) वनवासियों द्वारा बड़े पैमाने पर वाणिज्यिक लकड़ी कटाई का पूर्ण अधिकार
(d) सामुदायिक वन संसाधनों की रक्षा, पुनर्जनन अथवा प्रबंधन का अधिकार
उत्तर : (c)
व्याख्या:

- वन अधिकार अधिनियम, 2006 व्यक्तिगत और सामुदायिक दोनों प्रकार के अधिकारों को मान्यता देता है।
- इसमें लघु वन उपज पर स्वामित्व, वन ग्रामों का राजस्व ग्रामों में रूपांतरण तथा सामुदायिक संसाधनों की रक्षा व प्रबंधन सम्मिलित है।
- किंतु, बड़े पैमाने पर वाणिज्यिक लकड़ी कटाई का पूर्ण अधिकार मान्य नहीं है क्योंकि यह संरक्षण के उद्देश्य के विरुद्ध है।

प्रश्न 3. विदेशी पोर्टफोलियो निवेश (Foreign Portfolio Investment – FPI) के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. FPI का विनियमन भारतीय रिज़र्व बैंक (RBI) द्वारा FEMA अधिनियम, 1999 के अंतर्गत किया जाता है।
2. FPI में इक्विटी साधनों, ऋण साधनों और डेरिवेटिव्स में निवेश सम्मिलित होता है।
3. प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) के विपरीत, FPI कंपनियों में नियंत्रण अधिकार तथा प्रबंधन भागीदारी प्रदान करता है।

उपरोक्त में से कितने कथन सही हैं?
(a) केवल एक
(b) केवल दो
(c) सभी तीन
(d) कोई नहीं
उत्तर : (a)
व्याख्या:

- कथन 1 गलत है: FPI का विनियमन भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड (SEBI) द्वारा SEBI (FPI) विनियम, 2019 के अंतर्गत किया जाता है।
- कथन 2 सही है: FPI निवेश इक्विटी, ऋण तथा डेरिवेटिव्स में किया जा सकता है।
- कथन 3 गलत है: FPI एक निष्क्रिय निवेश है और इससे नियंत्रण अधिकार या प्रबंधन भागीदारी प्राप्त नहीं होती (FDI के विपरीत)।

- अतः केवल कथन 2 सही है → **सही विकल्प** (a) "केवल एक"।

प्रश्न 4. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. राज्य नीति के निदेशक तत्व (DPSPs) न्यायालयों द्वारा प्रवर्तनीय (enforceable) हैं, जबकि मौलिक कर्तव्य (Fundamental Duties) विधिक रूप से प्रवर्तनीय नहीं हैं।
2. मौलिक कर्तव्यों को संविधान में 42वें संशोधन अधिनियम, 1976 द्वारा जोड़ा गया था।
3. DPSPs और मौलिक कर्तव्य दोनों का उद्देश्य व्यक्तिगत अधिकारों और सामाजिक-आर्थिक जिम्मेदारियों के बीच संतुलन स्थापित करना है।
4. संविधान में प्रारंभ से ही मौलिक कर्तव्य सम्मिलित थे, जबकि DPSPs बाद में संशोधन द्वारा जोड़े गए।

उपरोक्त में से कौन-से कथन सही हैं?
(a) केवल 2 और 3
(b) केवल 1, 2 और 4
(c) केवल 2, 3 और 4
(d) 1, 2, 3 और 4
उत्तर : (a)
व्याख्या:

- कथन 1 गलत है: DPSPs न्यायालयों द्वारा प्रवर्तनीय नहीं हैं, जबकि कुछ मौलिक कर्तव्य अप्रत्यक्ष रूप से न्यायिक व्याख्या द्वारा प्रवर्तनीय हो सकते हैं।
- कथन 2 सही है: मौलिक कर्तव्य 42वें संशोधन द्वारा (भाग IVA, अनुच्छेद 51A) जोड़े गए।
- कथन 3 सही है: दोनों ही अधिकारों और जिम्मेदारियों में संतुलन हेतु बनाए गए।
- कथन 4 गलत है: DPSPs संविधान का प्रारंभिक अंग (भाग IV) हैं, मौलिक कर्तव्य बाद में जोड़े गए।

प्रश्न 5. कथन – कारण प्रकार:
कथन (A): एक ही गुणसूत्र पर एक-दूसरे के समीप स्थित जीन सामान्यतः एक साथ उत्तराधिकार में मिलते हैं।
कारण (R): ऐसे जीन 'लिंकेंज' प्रदर्शित करते हैं, क्योंकि उनके बीच क्रॉसिंग-ओवर की संभावना कम होती है।
(a) A और R दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
(b) A और R दोनों सही हैं, परंतु R, A की सही व्याख्या नहीं करता।
(c) A सही है, किंतु R गलत है।
(d) A गलत है, किंतु R सही है।
उत्तर : (a)
व्याख्या:

- जो जीन एक ही गुणसूत्र पर निकट स्थित होते हैं, उनके बीच मीयोसिस (meiosis) में क्रॉसिंग-ओवर होने की संभावना अत्यंत कम होती है।
- परिणामस्वरूप वे सामान्यतः एक साथ विरासत में मिलते हैं।
- इस प्रक्रिया को **लिंकेंज (Linkage)** कहा जाता है।
- अतः A और R दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।

दैनिक अभ्यास प्रश्न – करंट अफेयर्स अनुभाग से

प्रश्न 1. अरुणाचल प्रदेश के अपातानी (Apatanis) समुदाय के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. उनकी पारंपरिक कृषि-व्यवस्था स्थायी गीले धान-क्षेत्रों (wet-rice fields) पर आधारित है, जो मछली पालन से जुड़ी हुई है और जिसने ऐतिहासिक रूप से झूम खेती (shifting cultivation) पर निर्भरता को कम किया।

2. ज़ीरो घाटी का "अपातानी सांस्कृतिक परिदृश्य" (Apatani Cultural Landscape) यूनेस्को की विश्व धरोहर सूची के अस्थायी सूची (Tentative List) में सम्मिलित है।

उपरोक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(a) केवल 1
(b) केवल 2
(c) 1 और 2 दोनों
(d) न तो 1 और न ही 2

उत्तर : (c)

व्याख्या:

- अपातानी समुदाय ने एक अद्वितीय धान-तथा-मछली (paddy-cum-fish) प्रणाली विकसित की है, जिसमें सीढ़ीदार खेती (terrace cultivation) की जाती है और इससे झूम खेती पर निर्भरता कम हुई।
- ज़ीरो घाटी का अपातानी सांस्कृतिक परिदृश्य यूनेस्को की अस्थायी सूची में सम्मिलित है।

प्रश्न 2. भारत के राज्य चिह्न (State Emblem) के अनुचित प्रयोग पर रोक लगाने वाला विशिष्ट अधिनियम निम्नलिखित में से कौन-सा है?
(a) प्रतीक और नाम (अनुचित प्रयोग की रोकथाम) अधिनियम, 1950
(b) राष्ट्रीय सम्मान का अपमान निवारण अधिनियम, 1971
(c) भारत के राज्य चिह्न (अनुचित प्रयोग का निषेध) अधिनियम, 2005
(d) राजकीय गुप्त अधिनियम, 1923

उत्तर : (c)

व्याख्या:

- भारत के राज्य चिह्न (अनुचित प्रयोग का निषेध) अधिनियम, 2005 विशेष रूप से इस विषय को नियंत्रित करता है।
- अन्य अधिनियम व्यापक रूप से प्रतीकों, राष्ट्रीय सम्मान या गोपनीयता से संबंधित हैं।

प्रश्न 3. एमपॉक्स (mpox, पूर्व में मंकीपॉक्स) के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. डब्ल्यूएचओ ने 2022 में "mpox" शब्द की अनुशंसा की, जिससे "monkeypox" को एक संक्रमणकालीन अवधि के बाद प्रतिस्थापित किया गया।
2. 2022–23 के बहु-देशीय प्रकोप (multi-country outbreak) का मुख्य संबंध वायरस के क्लेड IIb से था।
3. डब्ल्यूएचओ द्वारा घोषित अंतर्राष्ट्रीय चिंता की सार्वजनिक स्वास्थ्य आपात स्थिति (PHEIC) को मई 2023 में समाप्त घोषित किया गया।

उपरोक्त में से कितने कथन सही हैं?
(a) केवल एक
(b) केवल दो
(c) सभी तीन
(d) कोई नहीं

उत्तर : (c)

व्याख्या:

- डब्ल्यूएचओ ने 2022 में "monkeypox" के स्थान पर "mpox" शब्द अपनाया।
- वैश्विक प्रकोप क्लेड IIb से संबंधित था।
- इस प्रकोप से जुड़ा PHEIC मई 2023 में समाप्त कर दिया गया।

प्रश्न 4. कोविन (CoWIN) तथा भारत के टीकाकरण ढाँचे के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. कोविन, डिजिटल रूप से सत्यापनीय (digitally verifiable) टीकाकरण प्रमाणपत्र जारी करता है, जिनमें ऑनलाइन सत्यापन योग्य QR कोड सम्मिलित होते हैं।
2. कोविन का स्वामित्व और संचालन स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय (MoHFW) द्वारा किया जाता है।
3. यू-विन (U-WIN) को सार्वभौमिक टीकाकरण कार्यक्रम (UIP) को डिजिटाइज़ करने हेतु लागू किया जा रहा है, जो कोविन की संरचना एवं एकीकरण का उपयोग करता है।

उपरोक्त में से कितने कथन सही हैं?
(a) केवल एक
(b) केवल दो
(c) सभी तीन
(d) कोई नहीं

उत्तर : (c)
व्याख्या:
- कोविन के प्रमाणपत्र डिजिटल हस्ताक्षर एवं QR कोड के साथ आते हैं।
- इसका संचालन स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय द्वारा किया जाता है।
- यू-विन को नियमित टीकाकरण के डिजिटलीकरण हेतु कोविन की संरचना का विस्तार करते हुए लागू किया जा रहा है।

प्रश्न 5. नीलगिरी चाय (Nilgiri Tea) के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. नीलगिरी ऑर्थोडॉक्स चाय (Nilgiri Orthodox Tea) भारत का एक पंजीकृत भौगोलिक संकेतक (GI) है।
2. नीलगिरी की पहाड़ियाँ दक्षिण-पश्चिम और उत्तर-पूर्व दोनों मानसून प्राप्त करती हैं, जिससे वर्षभर तोड़ाई (plucking) संभव होती है।
3. नीलगिरी में केवल ऑर्थोडॉक्स चाय का उत्पादन होता है; CTC वहाँ निर्मित नहीं होती।
4. इस क्षेत्र में लगभग पूरे वर्ष तोड़ाई संभव है क्योंकि चाय के पौधों में शीतनिद्रा (winter dormancy) होती है।

उपरोक्त में से कौन-से कथन सही हैं?
(a) केवल 1 और 2
(b) केवल 1 और 3
(c) केवल 2 और 4
(d) केवल 1, 2 और 4
उत्तर : (a)
व्याख्या:
- नीलगिरी ऑर्थोडॉक्स चाय GI- पंजीकृत है।
- क्षेत्र में दोनों मानसून आते हैं, जिससे वर्षभर पत्तियाँ तोड़ी जा सकती हैं।
- CTC भी यहाँ निर्मित होती है, अतः कथन 3 गलत है।
- शीतनिद्रा इसका कारण नहीं है, अतः कथन 4 गलत है।

प्रश्न 6. लाल सागर (Red Sea) के संदर्भ में निम्नलिखित युग्मों पर विचार कीजिए:
1. बाब-अल-मन्देब जलडमरूमध्य — लाल सागर को अदन की खाड़ी से जोड़ता है।
2. अक़ाबा की खाड़ी — केवल जॉर्डन और इज़राइल से घिरी है।
3. जेद्दा बंदरगाह (सऊदी अरब) — लाल सागर पर स्थित है।
4. सकोट्रा द्वीप — लाल सागर के भीतर स्थित है।

उपरोक्त में से कितने युग्म सही रूप से सुमेलित हैं?
(a) केवल एक
(b) केवल दो
(c) केवल तीन
(d) सभी चार
उत्तर : (b)
व्याख्या:
- बाब-अल-मन्देब जलडमरूमध्य लाल सागर को अदन की खाड़ी से जोड़ता है (सही)।
- अक़ाबा की खाड़ी चार देशों से घिरी है, न कि केवल दो से (गलत)।
- जेद्दा बंदरगाह लाल सागर पर स्थित है (सही)।
- सकोट्रा द्वीप अरब सागर में स्थित है, लाल सागर में नहीं (गलत)।
- अतः केवल दो युग्म सही हैं।

दैनिक अभ्यास हेतु विषय आधारित प्रश्न

GS – 1

प्रश्न 1: "भक्ति और सूफ़ी आंदोलनों ने न केवल अनुष्ठानवाद को चुनौती दी बल्कि सामाजिक-सांस्कृतिक एकीकरण के शक्तिशाली साधन भी बने। समीक्षात्मक परीक्षण कीजिए।"

नमूना उत्तर :

भक्ति और सूफ़ी आंदोलन मध्यकालीन भारत के इतिहास में एक **सभ्यतागत मोड़** का प्रतिनिधित्व करते हैं। ये आंदोलन हिन्दू और इस्लाम दोनों धर्मों के भीतर बढ़ती रूढ़िवादिता, अनुष्ठानवाद और सामाजिक विभाजन के प्रतिरोध स्वरूप उभरे।

- **भक्ति संत** जैसे कबीर, मीराबाई, तुलसीदास, नामदेव ने निर्गुण भक्ति और ईश्वर के साथ सीधा व्यक्तिगत संबंध पर बल दिया।
- **सूफ़ी संत** जैसे ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती और निज़ामुद्दीन औलिया ने प्रेम, करुणा और मानव-सेवा को आध्यात्मिकता का आधार बनाया।

प्रमुख योगदान

- **अनुष्ठानों और रूढ़िवादिता को चुनौती**
  - जातिगत भेदभाव, अस्पृश्यता और निरर्थक यज्ञ-बलियों का विरोध।
  - कबीर के दोहे और बसवन्ना की वचनाएँ तीव्र सामाजिक आलोचना थीं।
- **सांस्कृतिक समन्वय**
  - भक्ति साहित्य ने हिन्दी, मराठी, कन्नड़, बांग्ला जैसी भाषाओं को समृद्ध किया।
  - सूफ़ी परंपरा ने उर्दू और हिन्दुस्तानी संगीत को प्रभावित किया।
- **सामुदायिक स्थल**
  - ख़ानकाह और भजन मंडलियों ने साझा आध्यात्मिकता के लिए मंच प्रदान किए।
- **राजनीतिक प्रभाव**
  - विविधतापूर्ण समाज में साम्प्रदायिक सीमाओं को नरम कर सांस्कृतिक सेतु बने।

सीमाएँ

- रूढ़िवादिता पूर्णतः समाप्त नहीं हुई।
- जातिगत विभाजन अब भी बना रहा।
- समय के साथ भक्ति की समानतावादी भावना पुनः मुख्यधारा के अनुष्ठानों में विलीन हो गई।

निष्कर्ष

भक्ति और सूफ़ी आंदोलन केवल आध्यात्मिक धारा न होकर **सांस्कृतिक पुल** थे। उन्होंने सहिष्णुता, बहुलता और समन्वय के मूल्यों को भारतीय संस्कृति में गहराई से रोपा, जिनका प्रभाव आगे चलकर **सिख धर्म और 19वीं शताब्दी के समाज-सुधार आंदोलनों** पर पड़ा।

GS – 2

प्रश्न 2: "आरक्षण नीतियों के बावजूद भारत में सामाजिक न्याय अभी भी दुर्लभ है। संरचनात्मक चुनौतियों पर चर्चा कीजिए और सुधार सुझाइए।"

नमूना उत्तर :

भारत का **संवैधानिक वचनबद्धता** सामाजिक न्याय के प्रति अनुच्छेद 14–17, 38 और 46 में निहित है। आरक्षण नीतियाँ शिक्षा, रोजगार और राजनीतिक प्रतिनिधित्व के माध्यम से हाशिए पर पड़े वर्गों को ऊपर उठाने हेतु बनाई गईं।

प्रमुख संरचनात्मक चुनौतियाँ

- **जातिगत कठोरता** – संसाधनों और सामाजिक नेटवर्क तक पहुँच जाति आधारित बनी हुई है।
- **क्रीमी लेयर और अंतर्ग्रुप असमानता** – अपेक्षाकृत सशक्त उप-समूह लाभ उठा लेते हैं जबकि दलित महिलाएँ या विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूह पीछे छूट जाते हैं।
- **आर्थिक विषमता** – गरीबी और जाति का अंतःसंबंध गतिशीलता को कठिन बनाता है।
- **शैक्षिक कमी** – कमजोर विद्यालयी व्यवस्था और डिजिटल विभाजन उच्च शिक्षा तक पहुँच में बाधा हैं।
- **सामाजिक भेदभाव** – आवास, विवाह और श्रम बाजार में भेदभाव अब भी विद्यमान।
- **नीतिगत खामियाँ** – आरक्षण पर अत्यधिक निर्भरता, लेकिन स्वास्थ्य, कौशल और सामाजिक पूँजी में निवेश की कमी।

सुधार हेतु उपाय

- **लक्षित कदम** – अनुसूचित जाति/जनजाति के भीतर उपवर्गीकरण।
- **गुणवत्तापूर्ण शिक्षा** – सरकारी विद्यालयों, मध्याह्न भोजन, और डिजिटल पहुँच में सुधार।
- **सामाजिक संवेदनशीलता** – भेदभाव-विरोधी जागरूकता अभियानों का सुदृढ़ीकरण।
- **आरक्षण से परे** – कौशल विकास, उद्यमिता, भूमि सुधार।
- **क़ानून का प्रवर्तन** – एससी/एसटी (अत्याचार निवारण) अधिनियम का प्रभावी क्रियान्वयन।
- **अंतःविषयक नीतियाँ** – लिंग, जाति और गरीबी को एकीकृत रूप से संबोधित करना।

निष्कर्ष

सिर्फ़ आरक्षण पर्याप्त नहीं। वास्तविक सामाजिक न्याय तभी संभव होगा जब शिक्षा, अर्थव्यवस्था और सामाजिक संबंधों की गहरी असमानताओं को दूर किया जाए, ताकि संविधान में निहित समानता का वादा व्यवहार में साकार हो सके।

GS – 3

प्रश्न 3: "भारत में शहरी बाढ़ की बढ़ती घटनाएँ केवल जलवायु परिवर्तन नहीं, बल्कि शहरी नियोजन के संकट को इंगित करती हैं। समीक्षात्मक विश्लेषण कीजिए।"

नमूना उत्तर :

मुंबई (2005, 2017), चेन्नई (2015), हैदराबाद (2020), बेंगलुरु (2022) जैसी घटनाएँ बताती हैं कि शहरी बाढ़ एक **नियमित आपदा** बन चुकी है।

शहरी नियोजन की विफलताएँ

- **प्राकृतिक जलनिकासी पर अतिक्रमण** – झील, आर्द्रभूमि और नालों पर अतिक्रमण।
- **अनियंत्रित शहरीकरण** – ज़ोनिंग कानूनों का अभाव, पक्की सतहों से भू-जल पुनर्भरण बाधित।
- **कमज़ोर नालीनिर्माण** – पुराने नेटवर्क और कचरे से अवरुद्ध नालियाँ।
- **शासन की कमजोरी** – अनेक एजेंसियों में समन्वय की कमी।
- **जलवायु अनुकूलन की उपेक्षा** – मास्टर प्लान में जोखिम-मानचित्रण का अभाव।

जलवायु परिवर्तन की भूमिका

- बादलों का फटना, असमान मानसून, समुद्र-स्तर वृद्धि से जोखिम बढ़ा।
- लेकिन मानवीय कुप्रबंधन के बिना केवल वर्षा से इतनी तबाही नहीं होती।

समीक्षात्मक दृष्टि

- बाढ़ "प्राकृतिक" नहीं, बल्कि **मानव-निर्मित आपदा** हैं।
- चेन्नई (पल्लीकरणई आर्द्रभूमि पर अतिक्रमण) और बेंगलुरु (आईटी कॉरिडोर जलभराव) इसके उदाहरण हैं।

आगे की राह

- ज़ोनिंग नियमों का पालन और आर्द्रभूमियों की सुरक्षा।
- **प्रकृति-आधारित समाधान** – बायो-स्वेल, पारगम्य पक्कीकरण, शहरी वनों का निर्माण।
- आधुनिक नालीनिर्माण और रीयल-टाइम सेंसर।
- **एकीकृत आपदा प्रबंधन प्राधिकरण**।
- स्मार्ट सिटी और अमृत योजनाओं में जलवायु जोखिम मूल्यांकन।

निष्कर्ष

जलवायु परिवर्तन एक **गुणक कारक** है, परंतु जड़ समस्या शहरी नियोजन की विफलता है। बाढ़ की समस्या तब तक बनी रहेगी जब तक शासन प्रतिक्रियात्मक राहत से आगे बढ़कर **पूर्व-सक्रिय, सुदृढ़ शहरी नियोजन** को नहीं अपनाता।

GS – 4

प्रश्न 4: "'अधिकतम लोगों का अधिकतम हित' (Utilitarian Principle) शासन की नीतियों को आकार देता रहा है, लेकिन यह नैतिक दुविधाएँ भी उत्पन्न करता है। विवेचना कीजिए।"

नमूना उत्तर :

उपयोगितावाद, जेरेमी बेंथम और जॉन स्टुअर्ट मिल द्वारा प्रतिपादित, कहता है कि किसी क्रिया की नैतिकता उसके **परिणामों** से आंकी जानी चाहिए—अधिकतम सुख/कल्याण की दृष्टि से।

योगदान

- **नीतिनिर्माण** – लागत-लाभ विश्लेषण, सार्वजनिक स्वास्थ्य अभियान आदि।
- **लोकतांत्रिक भावना** – बहुसंख्यक हित आधारित निर्णय।
- **कानूनी सुधार** – तर्कसंगत और धर्मनिरपेक्ष संहिताबद्ध कानून।

नैतिक दुविधाएँ

- **बहुसंख्यक का अत्याचार** – अल्पसंख्यक अधिकारों की उपेक्षा।
- **सुख का मापन** – न्याय, गरिमा जैसी अमूर्त मान्यताओं को संख्यात्मक रूप नहीं दिया जा सकता।
- **साधन बनाम लक्ष्य** – संदिग्ध साधनों को भी वैध ठहराया जा सकता है।
- **तात्कालिक बनाम दीर्घकालिक** – अल्पकालीन लाभ भविष्य की स्थिरता को क्षति पहुँचा सकता है।

सुलह प्रयास

- मिल ने गुणात्मक सुख और व्यक्तिगत स्वतंत्रता पर बल दिया।
- आधुनिक शासन में उपयोगितावाद के साथ **कर्तव्य-आधारित और अधिकार-आधारित सिद्धांत** भी जोड़े गए।

निष्कर्ष

उपयोगितावाद शासन का व्यावहारिक मार्गदर्शक है, परंतु शासन को केवल संख्याओं की गणना तक सीमित नहीं किया जा सकता। **अधिकार, गरिमा और न्याय** को सम्मिलित करने वाला संतुलित नैतिक ढाँचा आवश्यक है।

समसामयिक परिप्रेक्ष्य

प्रश्न 5: "ऑपरेशन गुद्दर ने भारत की आंतरिक सुरक्षा ढाँचे में प्रतिरोध-विरोधी अभियानों की बदलती प्रकृति को उजागर किया है। इसके महत्व, चुनौतियों और निहितार्थों पर चर्चा कीजिए।"

नमूना उत्तर :

ऑपरेशन गुद्दर (2024) छत्तीसगढ़ के माड़ क्षेत्र में माओवादी उग्रवादियों के विरुद्ध चलाया गया व्यापक अभियान है। यह भारत की प्रतिरोध-विरोधी रणनीति में महत्वपूर्ण मील का पत्थर है।

महत्व

- **रणनीतिक प्रवेश** – लंबे समय से दुर्गम माओवादी क्षेत्रों में स्थायी कैम्प स्थापित।
- **मनोवैज्ञानिक प्रभाव** – राज्य की क्षमता का प्रदर्शन, माओवादी प्रचार को कमजोर किया।
- **समन्वित दृष्टिकोण** – सीआरपीएफ, कोबरा, राज्य पुलिस व खुफिया एजेंसियों का सहयोग।
- **सुरक्षा-विकास संबंध** – सड़क संपर्क और कल्याणकारी योजनाओं की तैयारी।

चुनौतियाँ

- **भू-भाग और लॉजिस्टिक्स** – घने जंगल, बारूदी सुरंगें।
- **नागरिक सुरक्षा** – अति- सैन्यीकरण से स्थानीय आदिवासियों का अलगाव संभव।
- **माओवादियों की लचीलापन** – भूमिगत नेटवर्क और स्थानीय समर्थन।
- **विकास की कमी** – शिक्षा, स्वास्थ्य और आजीविका का अभाव।

निहितार्थ

- **सुरक्षा परिदृश्य** – माओवादियों के प्रभाव-क्षेत्र का संकुचन।
- **नीतिगत दिशा** – "क्लियर, होल्ड, बिल्ड" सिद्धांत को बल।
- **दीर्घकालिक स्थिरता** – आदिवासियों का एकीकरण राज्य की जवाबदेही पर निर्भर।
- **राष्ट्रीय संदेश** – वामपंथी उग्रवाद के निर्णायक अंत का संकेत।

निष्कर्ष

ऑपरेशन गुद्दर भारत की परिपक्व होती प्रतिरोध-विरोधी रणनीति का परिचायक है। इसकी सफलता का वास्तविक पैमाना होगा – क्या सुरक्षा लाभों को **सामाजिक-आर्थिक न्याय** के साथ स्थायी बनाया जा सकता है।

SIXSIGMA IAS
Dream | Dare | Deliver